डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

जीवन, दर्शन, राष्ट्र निर्माण एवं ऐतिहासिक योगदान (विस्तृत जीवनी)

पूर्ण नाम	डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी
जन्म	6 जुलाई 1901, कलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
निधन (शहादत)	23 जून 1953, श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर)
माता-पिता	सर आशुतोष मुखर्जी (न्यायाधीश एवं शिक्षाविद) एवं श्रीमती जोगेमाया देवी
मुख्य पहचान	महान शिक्षाविद, स्वतंत्र भारत के प्रथम उद्योग मंत्री, भारतीय जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष

प्रस्तावना

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्वतंत्र भारत के इतिहास में एक ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिन्होंने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी अमूल-चूल परिवर्तन किए, बल्कि भारत की राजनीतिक दिशा को एक नई वैचारिक धारा प्रदान की। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे—एक प्रखर शिक्षाविद्, प्रबुद्ध विचारक, बैरिस्टर, कुशल प्रशासक और माँ भारती की अखंडता के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले परम देशभक्त। स्वतंत्र भारत के प्रथम मंत्रिमंडल में उद्योग और आपूर्ति मंत्री के रूप में उन्होंने देश के आधुनिक औद्योगिक विकास की सुदृढ़ नींव रखी। जब राष्ट्र की एकता और संप्रभुता पर संकट मंडराया, तो उन्होंने सत्ता सुख का परित्याग कर विपक्ष की भूमिका चुनी और 'भारतीय जनसंघ' के रूप में देश को एक वैकल्पिक राष्ट्रवादी राजनीतिक चेतना प्रदान की।

१. वंश परंपरा, जन्म एवं प्रारंभिक जीवन

- **पैतृक विरासत:** डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म ६ जुलाई १९०१ को कलकत्ता के एक अत्यंत प्रतिष्ठित और विद्वान परिवार में हुआ था। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति थे, जिन्हें उनकी निर्भीकता के कारण 'बंगाल का बाघ' (Tiger of Bengal) कहा जाता था।
- **संस्कारों की नींव:** उनकी माता श्रीमती जोगेमाया देवी एक धार्मिक और दृढ़ संकल्प वाली महिला थीं, जिन्होंने श्यामा प्रसाद जी के भीतर बचपन से ही सनातन मूल्यों, संस्कारों और मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम के बीज बोए।

२. अद्वितीय शैक्षणिक यात्रा एवं बौद्धिक उत्कर्ष

- **स्वर्ण पदक विजेता:** डॉ. मुखर्जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातक (B.A.) और बंगाली भाषा व साहित्य में स्नातकोत्तर (M.A.) की डिग्रियां सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदकों के साथ पूरी कीं।
- **लंदन में वकालत की शिक्षा:** वर्ष १९२६ में वे कानूनी व्यवस्था को समझने इंग्लैंड गए। वहाँ उन्होंने 'लिंकन्स इन' (Lincoln's Inn) से १९२७ में 'बैरिस्टर-एट-लॉ' की उपाधि प्राप्त की और भारत लौटकर वकालत प्रारंभ की।

३. इतिहास के सबसे युवा कुलपति

- **३३ वर्ष की आयु में कीर्तिमान:** वर्ष १९३४ में मात्र ३३ वर्ष की आयु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति (Vice-Chancellor) बने। वे इस प्रतिष्ठित पद को सुशोभित करने वाले इतिहास के सबसे युवा व्यक्ति थे।
- **क्रांतिकारी सुधार:** अपने चार वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने विश्वविद्यालय स्तर की उच्च परीक्षाओं में पहली बार बंगाली और हिंदी जैसी भारतीय भाषाओं को वैकल्पिक माध्यम के रूप में अनिवार्य कराया। इसके साथ ही उन्होंने कृषि, सैन्य शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान पाठ्यक्रमों की नींव रखी।

४. स्वतंत्रता पूर्व राजनीतिक दूरदर्शिता

- **प्रांतीय राजनीति एवं वित्त मंत्री:** वर्ष १९२९ में बंगाल विधान परिषद से राजनीतिक जीवन की शुरुआत करने के बाद, उन्होंने १९४१-४२ में बंगाल प्रांत के वित्त मंत्री के रूप में महत्वपूर्ण कार्य किए। वे अखिल भारतीय हिंदू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे।
- **पश्चिम बंगाल के रक्षक:** १९४७ में विभाजन के समय जब पूरे बंगाल को पाकिस्तान में शामिल करने की योजना बनाई जा रही थी, तब डॉ. मुखर्जी ने प्रखर आंदोलन चलाकर हिंदू-बहुल क्षेत्रों को मिलाकर 'पश्चिम बंगाल' का गठन सुनिश्चित किया और लाखों लोगों को मजहबी दमन से बचा लिया।

५. स्वतंत्र भारत के प्रथम उद्योग मंत्री

- **औद्योगिक नीति (१९४८):** भारत के आजाद होने पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें देश का पहला उद्योग और आपूर्ति मंत्री नियुक्त किया। भारत की पहली ऐतिहासिक औद्योगिक नीति (1948) का खाका डॉ. मुखर्जी ने ही तैयार किया, जिसने 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' की नींव रखी।
- **बुनियादी उद्योगों की स्थापना:** उन्होंने देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स, सिंदरी खाद कारखाना और हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट (HAL) जैसी विशाल औद्योगिक इकाइयों की आधारशिला रखी।

"एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे, नहीं चलेंगे।"

६. ऐतिहासिक इस्तीफा और जनसंघ की स्थापना

- **सिद्धांतों के लिए सत्ता का परित्याग:** विभाजन के बाद पाकिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों और तुष्टिकरण की नीतियों के विरोध में, विशेषकर 'नेहरू-लियाकत समझौते (1950)' के विरोध में उन्होंने ८ अप्रैल १९५० को केंद्रीय मंत्रिमंडल से अपना इस्तीफा दे दिया।
- **भारतीय जनसंघ की नींव:** देश के सामने एक मजबूत राष्ट्रवादी विकल्प रखने के लिए उन्होंने २१ अक्टूबर १९५१ को दिल्ली में "भारतीय जनसंघ" की स्थापना की, जो बाद में 'भारतीय जनता पार्टी' (BJP) के रूप में पुनर्गठित हुआ।
- **संसद के शेर:** १९५२ के पहले आम चुनाव में सांसद चुने जाने के बाद विपक्ष के नेता के रूप में उनके तीखे और तार्किक भाषणों के कारण उन्हें "संसद का शेर" कहा गया।

७. कश्मीर आंदोलन और सर्वोच्च बलिदान

- **अनुच्छेद ३७० का विरोध:** डॉ. मुखर्जी जम्मू-कश्मीर को दिए गए विशेष दर्जे, अलग संविधान, अलग झंडे और अलग प्रधानमंत्री की व्यवस्था के सख्त खिलाफ थे। वे कश्मीर जाने के लिए अनिवार्य 'परमिट व्यवस्था' को भारत की संप्रभुता पर आघात मानते थे।
- **बिना परमिट प्रवेश और शहादत:** इस दमनकारी व्यवस्था को तोड़ने के लिए उन्होंने ११ मई १९५३ को बिना परमिट के कश्मीर सीमा में प्रवेश किया, जहाँ उन्हें गिरफ्तार कर श्रीनगर में नजरबंद कर दिया गया। नजरबंदी के दौरान ही स्वास्थ्य बिगड़ने से २३ जून १९५३ को रहस्यमयी परिस्थितियों में उनका महाप्रयाण हो गया।

मुख्य योगदान का सारांश

क्षेत्र	मुख्य योगदान एवं ऐतिहासिक प्रभाव
शिक्षा क्षेत्र	कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति; उच्च शिक्षा में हिंदी-बंगाली जैसी भारतीय भाषाओं को लागू करना।
आर्थिक राष्ट्रवाद	प्रथम औद्योगिक नीति (1948) का निर्माण; चित्तरंजन, सिंदरी और HAL जैसे बुनियादी उद्योगों की स्थापना।
प्रादेशिक अखंडता	जिन्ना के मंसूबों को नाकाम कर भारत के अभिन्न अंग के रूप में 'पश्चिम बंगाल' का निर्माण कराया।
राजनैतिक विज़न	राष्ट्रवादी विचारधारा पर आधारित 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना (1951), जो आज भाजपा के रूप में प्रतिष्ठित है।
सर्वोच्च बलिदान	अनुच्छेद 370 के खिलाफ कश्मीर में बिना परमिट प्रवेश; देश की संप्रभुता के लिए श्रीनगर में रहस्यमयी शहादत।

निष्कर्ष

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का संपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति, अखंडता और संप्रभुता के संरक्षण के प्रति समर्पित था। ५ अगस्त २०१९ को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद ३७० का पूर्ण उन्मूलन और कश्मीर का भारत में वास्तविक विलय डॉ. मुखर्जी के बलिदान को राष्ट्र की ओर से दी गई सबसे सच्ची श्रद्धांजलि है। उनका जीवन चरित्र संपूर्ण देशवासियों को 'राष्ट्र प्रथम' (Nation First) के मार्ग पर चलने के लिए अनंत काल तक प्रेरित करता रहेगा।